अंतरा-शब्दशक्ति

(काव्य संग्रह)

हिमनद

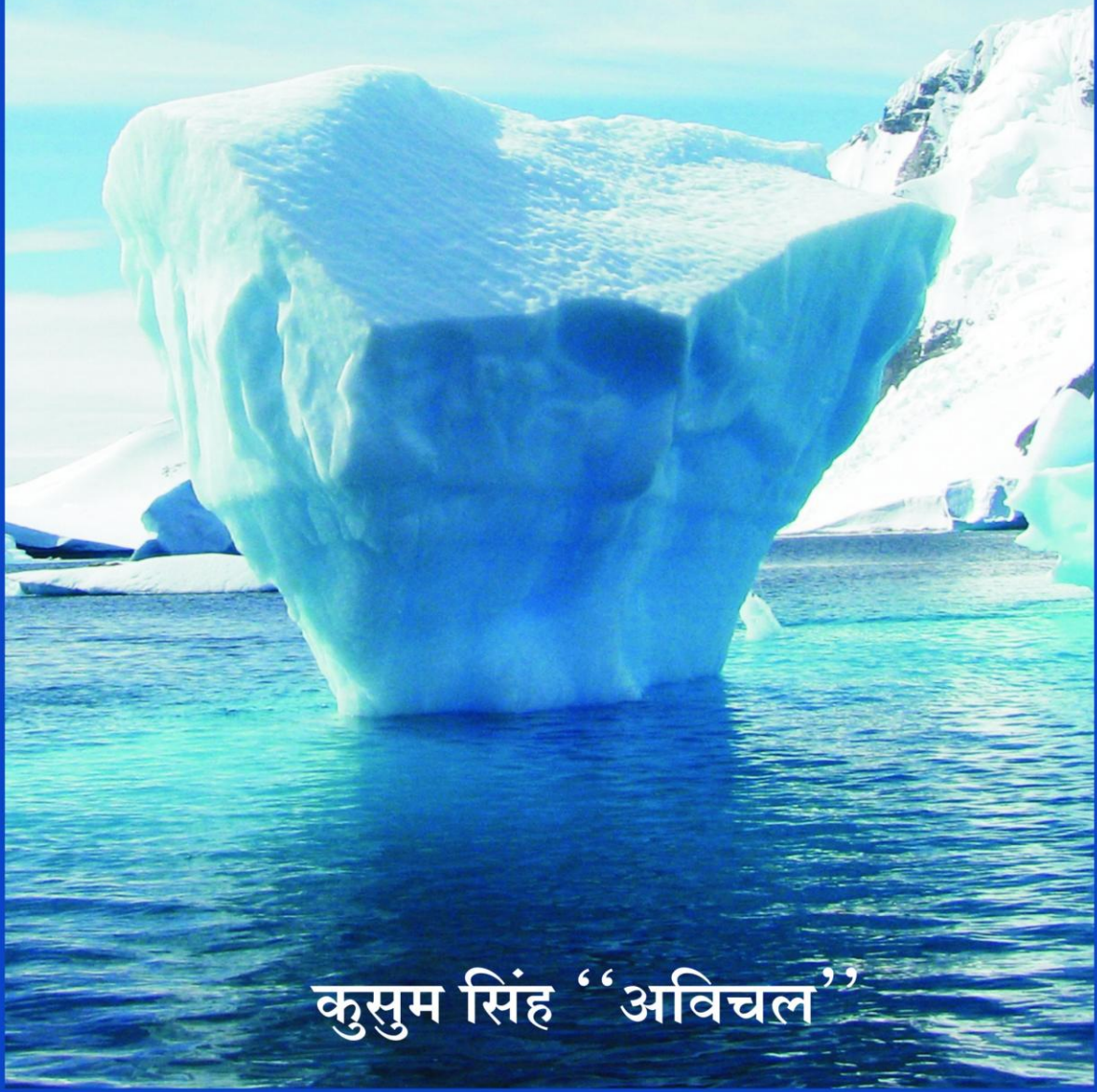

कुसुम सिंह "अविचल"

हिमनद

(काव्य संग्रह)

कुसुम सिंह "अविचल"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-23-0

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८©कुसुम सिंह"अविचल"

मूल्य: **४०.००** रुपये

आवरण: संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कंप्यूटर्स, वारासिवनी

Himnad by Kusum Singh 'Avichal'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

भूमिका

जब पर्वतों पर जमी बर्फ कुछ ऊष्मा पाकर पिघल कर धाराप्रवाह बहने लगती है तो उसे हिमनद कहते हैं। यदि वह हिम द्रवित होकर बहेगी नहीं तो जलप्रपात के रूप में हम प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन नहीं कर पाएंगे और हमारी नदी-घाटी को भी जल नही मिल पायेगा। हिमखण्ड जमता जाएगा ,ठोस होता जाएगा और किसी दिन हिमस्खलन के रूप में गिर कर किसी को आहत करेगा,मार्ग अवरूद्ध करेगा। अतः हिमनद का बहना आवश्यक है।

ठीक उसी प्रकार से साहित्यकार, रचनाकार कवि के मनोमस्तिष्क में हर समय विचार,भाव उमड़ते घुमड़ते रहते है। यदि वे मनोभाव,विचार अभिव्यक्त न हो,अंदर ही अंदर उठते रहें ,मिटते रहें तो आध्यात्मिक वर्ग , बौद्धिक वर्ग उन सद्विचारों,सद्ज्ञान से वंचित हो जाएगा।चिंतक ,विचारक भी कुंठाग्रस्त होगा। अतः जो भी भाव,विचार मन में उठे उनकी अभिव्यक्ति चाहे वाचिक वक्तव्य ,काव्यपाठ के माध्यम से चाहे लेखन के माध्यम से श्रोता ,पाठक तक पंहुचना चाहिए। हृदयों में जमीं विचारों, भावों की बर्फ परत दर परत पिघलनी चाहिए।

वैसे तो निःशब्द जो कहता है वह अति विशाल, ताकतवर होता है। उसके समक्ष शब्द कमज़ोर पड़ जाते हैं। किंतु निःशब्द की भाषा हर कोई नही समझता।इसीलिए उन भावों विचारों का पाठक तक सम्प्रेषण अति आवश्यक है। हृदयस्थ वैचारिक ,भावनात्मक हिम का नद के रूप में अभिव्यक्तिकरण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

मेरे हृदय की भावनात्मक संवेदनाओं ने जब आकार लिया तो सीधे सीधे मुखारबिंद से होती हुई लेखनी के माध्यम से कागज़ पर उतर गई।मैनें "हिमनद" में अपने अंतस में उठती हुई संवेदनशील भावनाओं से पाठक को जोड़ने का प्रयास किया है।सभी 15 कविताएं निश्चित रूप से सीधे हृदय रूपी हिमखंड से पिघल कर स्याही रूपी नद स्वरूप कलम रूपी धारा के माध्यम से धरा रूपी कागज़ पर उतर गई हैं और हिमनद बन गया। सभी में कुछ वेदना है ,कुछ चुभन है ,कुछ चिंतन है,कुछ मनन है,कुछ दर्शन है। कुछ प्रगतिवाद भी लिखने का प्रयास किया है। सभी रचनाएँ भावप्रधान हैं। भावपक्ष को सर्वोपरि रखते हुए कला पक्ष से समझौता किया है। मेरा पूरा प्रयास रहा है कि कविताएं पाठक के दिल की गहराइयों तक पैठ बनाती हुई उनके मनोमस्तिष्क पर अपना प्रभाव छोड़ें बिना न रहे। पाठक विवश हो कुछ विचार करने को। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी रचनाएँ पाठकों को पसंद आएगी,वे मुझे अपनी शुभकामनाओं के संबल देंगे।

सविनय अभिवादन

कुसुम सिंह "अविचल" कानपुर (उ०प्र०)

अनुक्रमणिका

1. मेरे जीवन का ध्रुव तारा	5
2. एकाकी अंतस	6
3. थका नहीं तन मन	7
4. उठा था-एक नवल भाव	8
5. लिख लूँ कालजयी रचना	9
6. दर्द	10
7. कटीली राहों पर	11
8. जीवन दर्शन	12
9. मानव-धर्म	13
10.प्रतिबद्धता	14
11.अपसंस्कृति	15
12.आरक्षण	16

मेरे जीवन का ध्रुव तारा

मेरे जीवन का ध्रुव तारा,फलक पर जाके बैठा है,
दिखाता जो मुझे रस्ता, सदा को रूठ बैठा है।

मेरी बगिया का माली वो,कहाँ छिपकरके बैठा है,
निगाहें ढूंढती उसको,नज़र में कुछ न आता है।

स्वर्ग से उतरी एक कन्या,परी बनकर जो आयी है,
अटल ध्रुव तारे का मानो कोई पैगाम लायी है।

जिसे दिल ने सहेजा है,हृदय में रख सजाया है,
उसी पैगाम की खातिर, कविता को रचाया है।

हृदय में भाव उठते है , तो कविता बन ही जाती है,
अधर तक जो न आ पाए,वो शब्दों में समाती है।

जो अंतर्यामी है दुनियाँ का,उसी से बात करती हूँ,
दे मन कि शक्ति वो मुझको, यही विश्वास करती हूँ।

एकाकी अंतस

अंतस का एकाकीपन हरदिन,कई कई बार रुला जाता,
फिर कोई चुपके से आकर , धीरे से बहला जाता।

ऐसी होती है व्यथा कथा,इसका मुझको एहसास न था,
अंदर होगी इतनी टूटन , इसका भी आभास न था।

पलकें अश्कों से भरी हुई,मुस्कान अधर पर रहती है,
पाषाण नहीं है दिल मेरा,दिल में धड़कन भी बसती है।

दबी आर्त चीखें तड़पन में, दबा दर्द है सीने में,
चहुँ ओर नज़र आता है बस,एकांत सघन तम जीने में।

थका नहीं तन मन

कर्तव्यों को निर्वाहित करते थका नहीं तन मन,
रिश्तों को सम्मानित करते थका नहीं तन मन।

पर एकाकीपन थका रहा मुझको निसिदिन,
पता नहीं था वीरान यह जीवन हो जाएगा एक दिन।

साथ छोड़ कर पथ में कुछ राही, यूँ ही खो जाएंगे,
पता नहीं था उनके वियोग में,रीते हम हो जाएंगे।

बड़ा दर्द होता है दिल में,अपनों से जब बिछुड़न होती,
वही तड़प उठती सीने में,जो जल बिन मीन की तड़पन होती।
मिले दर्द पर दर्द मुझे,स्तब्ध हुई कुछ मौन हुई,
जिस सर्वशक्ति में निष्ठा थी,वह भी कैसी अब कौन हुई

अब नहीं डालती नज़र कभी,आराध्य मेरे सब जानते हैं
छल किया मेरे संग धोखे से,वो सबको ही पहचानते है।

उठा था-एक नवल भाव

नयन कंचन थाल भर कर आरती उतरेंगे,
भाव मेरे अंतस के,उन तक ले जाएंगे।

कैसे कहूँ नयन उनको कैसे संवारेंगे,
अक्षु अश्रु बिंदुओं से,उनको निखारेंगे।

मंद पवन काली घटाओं को संभारेंगें,
पेशानी पर चमकती स्वेद बिंदु उचारेँगे।

नयन मेरे उनका आनन ही निहारेंगे,
अपने बाहु पाश से उनको सिहारेंगें।

उपवन के सभी कुसुम,सुगंधित पधारेंगे,
अपना अस्तित्व दांव लगा,उनको सजायेंगे।

कल्पनाओं के महल,भावनाओं के महल,
मन मेरे अकिंचन ,बार बार बनायेनगें।

लिख लूँ कालजयी रचना

अश्रुपूरित नेत्र ये , जब दर्द से बोझिल हुए,
तो लुढ़ककर गिर पड़े और आह दिल की कह गए।

लो संभल कर लेखनी ,अब चल पड़ी है दर्द पर,
लगता मन कि वेदना, मुखरित हुई है इस कदर।

दर्दपूरित हृदय यह,वाणी से तो कुछ कह न पाया,
सिल गए है अधर दोनों,अभिव्यक्त कुछ भी हो न पाया

क्या करें मजबूर हैं हम , लेखनी भी रो पड़ी है,
पर बनी हमदर्द मेरी , साथ वो मेरे खड़ी है।

हमसफर हमराज़ हो यह,बस यही अब चाह मेरी,
रच लूँ कोई कालजयी कृति,बस यही अब साध मेरी।

दर्द

ग़ज़ल जो दर्द बुनती है,वो दिल के पार होता है,
कसक सीने में उठती है,अश्क का वार होता है।

जो दिल का दर्द था मेरा,दवा वो ही जिगर की था,
लबों पर नाम जिसका था,वही चेहरा नज़र में था।

गुज़र गए है सभी लम्हें,फ़क़त बस याद बाकी है,
उन्हीं यादों की फितरत है,कि तन में जान बाकी है।

जो थे मंज़ूर जीवन को,वही हमसे खफा हो गए,
थी मंज़िल एक दोनों की,मगर रस्ते जुदा हो गए।

कहाँ जाके उन्हें ढूंढे,जो दुनियाँ से बिदा हो गए,
बसी हैं दिल में बस यादें,बाकी सब खुदा हो गए।

कटीली राहों पर

चल सको कटीली राहों पर,तो तुम मेरे साथ चलो,
समझ सको मेरे अंतस को,तो तुम मुझसे हिलो मिलो।

मेरे नयनों के दर्पण में,जलते रहते है अरमान,
दिल में कसक उठा करती है,मचला करते हैं तूफान।

आशाएँ तो बूंद बूँद ही,देती जीवन को उपहार,
बिना सुधा की इन बूंदों में,छुई मुई मेरा संसार।

तुम अमर बना दो इनको छू,तो मेरे हमराह बनो,
अन्यथा न छलिया मुझे छलो,अपनों में ही हिलो मिलो।

यदि मंज़िल से सिहर न जाओ,तो तुम मेरे गले मिलो,
चल सको कटीली राहों पर,तो तुम मेरे साथ चलो।

जीवन दर्शन

काया का कोई मोल नहीं,यदि प्राणवायु का संग न हो,
आत्मा का भी कोई अर्थ नहीं,यदि काया का रंग न हो।

तन मन का संगम होने से,होता है यह जीवन नवरंग,
इंद्रधनुष सा मोहक जीवन,स्वस्थ रखो क्या और मन।

स्वस्थ देह की पुष्टाहार, आत्मा का बल स्वस्थ विचार,
ज्ञानार्जन कर सत्कर्म करें,बढ़े सदबुद्धि और सदाचार।

जीवन दर्शन है मानव का,तन स्वस्थ रहे मन स्वस्थ रहे,
अध्ययन,चिंतन हो नित्य क्रिया,सदविचार सद्भाव भरे।

मानव-धर्म

स्वार्थपरता से भरे इंसान अब होने लगे है,
दिल में कालिख,धवल चेहरा,दोहरा चरित्र ढोने लगे है,
नवल यह जीवन का दर्शन सिमट कर रह गया स्व सा,
न था पहले मानव मानस,उलझा हुआ यूँ संकुचित सा।

क्या हुआ ये क्यों हुआ,कुछ समझ नहीं पाया स्वयं भी,
पर करें क्या परिस्थितयां हैं विषम भी और अहम भी,
विवशताओं बाध्यताओं वश ही हुआ होगा ये लंपट,
वरना दानी करण,बलि का देश है ये,न कि मरघट।

संसाधनों का जाल भी कुछ,संकुचित सीमित ही होगा,
तभी लाचार होकर के,वो अपने में ही सिमटा होगा,
मानव तो आखिर मानव है,ये देव नहीं है दुनियाँ का,
दानवता कभी न अपनाएं,बस यही धर्म मानवता का।

प्रतिबद्धता

प्रतिबद्धता से होते अनजान,कल्पना के संसार में,
अगणित विचार,अद्भुत प्रकार,सृजित होते मन में,
भावना के लोक में,कटिबद्धता के एहसास में,
हर विचार,हर भाव-सृजन,डाँवाडोल हो पल में।

प्रतिबद्ध हों तो हम आकाश झुका दें,सागर नाप लें,
वरना धरती पर ही जीवन की दूभरता को भाँप लें,
रुचि है पर प्रतिबद्ध नहीं,तो मंज़िल नहीं मिला करती,
हैं असीम ऊर्जा के वाहक,कटिबद्ध नहीं तो लक्ष्य रहित

उठो कमर कस युवा शक्ति,नव ऊर्जा से हुंकार भरो,
दुनियाँ में बढ़ता भ्रष्टाचार,आगे बढ़कर प्रतिकार करो,
नस नस में समाया दुराभाव, समाज बना बैठा लाचार,
तुम उठो कर्मपथ बुला रहा,निकृष्ट भ्रष्ट पर करो प्रहार।

अपसंस्कृति

संस्कृति पर अपसंस्कृति का बाना अगर नहीं होता,
तो शायद इस दुनियां में,व्यभिचारी दुष्कर्म नहीं होता।

देह प्रदर्शन नारी का नारी द्वारा ही होता है,
उस पर विचित्र सा अलंकरण,अंगारी उद्दीपन होता है।

नारीत्व उद्दीप्त करे नारी,तो नारी भी उत्तरदायी है,
नारी ही लज्जा त्याग करे,नर को क्यों लज्जा आयी है।

नारी का विकारी वस्त्रचयन,औ विस्मयकारीअलंकरण
यूँ अल्हड़ उन्मुक्त भ्रमण,उस पर फूहड़ सा अनावरण।

फिर दोष किसे देदें ऐसे,यदि वहशी अंकुश खोता है,
कामी, दुष्कर्मी, व्यभिचारी तो मनोविकारी होता है।

शालीन सौम्य श्रृंगारित नारी,मर्यादा गरिमा की देवी,
लज्जा में नारी बसती है,सभ्य सुसंस्कृत ममतामयी।

आरक्षण

भावी प्रतिभा के पंखों को उड़ने को आसमान दो,
आरक्षण की कैंची से मत कतरों इनके पर,समाधान दो।

हम सब मिलकर उद्घोष करें,आरक्षण को शमशान करें,
एकजुट हो सब आवाहन करें,आरक्षण का अवसान करें।

हम नहीं भिखारी इस जग में,हम मेहनतकश इंसान बनें,
नहीं समर्थक आरक्षण के,निज स्वाभिमान सम्मान बनें।

हम प्रखर संतति भारत की,अनुकंपा की मोहताज नहीं,
शूरवीर विद्वानों के वंशज हम,आरक्षण के साथ नहीं।

लगी दांव प्रतिष्ठा हम सबकी,सबके ज़मीर ललकार रहे,
करें हम सब प्रण आज अभी,कर्तव्य और अधिकार रहें।

न जाति गत,न सम्प्रदाय गत,न लिंग गत आरक्षण हो,
बटें समाज न टुकड़ों में,बस प्रतिभा का अवलोकन हो।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- कुसुम सिंह ''अविचल''
जन्म	- 29.04.1957
पिता	- स्व. सुंदर सिंह चन्देल
पता	- 1145 (प्लाट स्कीम), रतनलाल नगर, कानपुर - 208022 (उ.प्र.)
शिक्षा	- परास्नातक (अर्थशास्त्र), क्राइस्ट चर्च कॉलेज कानपुर
सम्प्रति	- पंजाब नेशन बैंक, कानपुर (अधिकारी पद से गतवर्ष सेवानिवृत)
वर्तमान	- साहित्यिक, सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता
कृतित्व	- प्रथम कविता संग्रह 'अनुभूति से अभिव्यक्ति तक' प्रकाशित 2016। द्वितीय काव्य कृति 'गागर से छलकता सागर' प्रकाशित 2018।
विधा	- कविता, गीत, दोहा, छंद मुक्त लेखन ।
सम्मान	- पंजाब नेशनल बैंक, कानुपर मंडल से 'राजभाषा सम्मान 2015' पं.ने.बै., प्र. कार्या. नई दिल्ली द्वारा 'लाला लाजपत राय' हिन्दी साहित सम्मान 2015 आगमन संस्था दिल्ली द्वारा 'आगमन गौरव सम्मान' 2017 अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस पर 'प्राईड ऑफ वोमेन' 2018 सम्मान
गतिविधियां	- नगर व बाहर हाने वाली वैचारिक गोष्ठियों, काव्य गोष्ठियों में सतत् सहभागिता
प्रकाशन	- पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कविताएं, गीतों का प्रकाशन।
उत्तरदायित्व	- अध्यक्ष - आगमन साहित्यिक समूह, कानपुर अध्यक्ष - मधुरिमा साहित्यिक संस्था, कानपुर संयोजक - भारत विकास परिषद, पांचजन्य शाखा, महिला प्रकोष्ठ, कानपुर
मो. नं.	- 09453815403, 09335723876

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़
आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-23-0

मूल्य- 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com